यह प्रश्न-पत्र एवं उत्तर पुस्तिका संयुक्त है।

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु राम

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा-2017

समय : 3 घण्टे
12:30 से 3:30 बजे तक

प्रश्न-उत्तर पत्र भाग - 11 तत्व

पूर्णांक : 100

नाम.....पिता/पति का नाम.....

शहर का नाम.....जन्मतिथि.....मोबाइल.....रोल नं.....

नोटः-सभी प्रश्नों के उत्तर, दिये गये निर्देशों के अनुसार, निर्धारित स्थान पर, इसी प्रश्न पत्र में लिखें। उत्तर पुस्तिका जाँचने पर यदि यह पुष्टि होती है कि परीक्षार्थी ने दूसरे का सहयोग लिया है अथवा एकाधिक पुस्तिकाओं के उत्तर समान है तो उसे नकल किया हुआ मानकर परिणाम निरस्त कर दिया जावेगा। केन्द्र अधीक्षक उपरोक्त प्रश्नोत्तर पुस्तिका परीक्षा समाप्ति के अगले दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) के पते पर भिजवावें।

जीवधड़ा

प्रश्न 1. सही जोड़ी मिलाइये :- **10**

1. सन्नी	(A) 212	.....
2. अवधिदर्शन	(B) 10	.....
3. शुक्ल लेश्या	(C) 424	.....
4. लवण समुद्र	(D) 84	.....
5. पर्याप्त	(E) 247	.....
6. नपुंसक वेद	(F) 216	.....
7. एक दृष्टि	(G) 219	.....
8. वैक्रिय मिश्र काययोग	(H) 193	.....
9. वब्रऋषभ नाराच संहनन्	(I) 290	.....
10. परिहार विशुद्धि चारित्र	(J) 231	.....

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ण कीजिए :- **5**

1. सम्यग्मिथ्या दृष्टि ..... जीवों में ही पायी जाती है?
2. दूसरी पृथ्वी के नैरयिक में ..... लेश्या पायी जाती है ?
3. सातवी पृथ्वी के अपर्याप्त में ..... होते है।

4. विद्युतकुमार भवनपति देव में ..... समकित नहीं पायी जाती है।

5. संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त ..... होते है।

प्रश्न 3. सही गलत :- **10**

1. कलोदघि समुद्र में ज्यातिषी देवता के 10 भेद पाये जाते है ? ( )

2. 86 युगलिक अपर्याप्त अवस्था में अमर होते है ? ( )

3. पांच लेश्या में जीव का कोई भी भेद नहीं पाया जाता है ? ( )

4. एकान्त मिथ्यादृष्टि देवता को अवधिदर्शन नहीं होता है ? ( )

5. अढ़ाई द्वीप के बाहर बादर तेउकाय नहीं पायी जाती है ? ( )

6. वाणव्यन्तर देवों में सन्नी-असन्नी दोनों पाये जाते है ? ( )

7. 15 कर्मभूमि के अपर्याप्त मनुष्य ही अनाहारक होते है ? ( )

8. स्थलचर युगलिक में क्षायिक समकित पायी जाती है ? ( )

9. मनुष्य को अपर्याप्त अवस्था में अवधिज्ञान और विभंगज्ञान दोनो हो सकता है ? ( )

10. सिद्ध शिला में बादर वायुकाय के अपर्याप्त और पर्याप्त दोनों भेद पाये जाते है? ( )

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए :- **10**

1. अभाषक में 15 कर्मभूमि के पर्याप्त के भेद क्यों लिए गए है

.....

2. श्रोतेन्द्रिय के अलद्धिये में जीव के कौन-कौन से भेद पाए जाते है ?

.....

3. कौन-कौन से देवता एकान्त मिथ्यादृष्टि होते है?

.....

4. छेदोपस्थापनीय चारित्र में जीव के 10 भेद लिए गए है क्यो ?

.....

5. सातवीं पृथ्वी के अपर्याप्त नैरयिक को अवधिज्ञान नहीं होता है परन्तु अवधिदर्शन उनमें पाया जाता है क्यों?

.....

6. अधोलोक में मनुष्य के तीन भेद किस अपेक्षा से लिए गए है?

.....

7. विभंगज्ञान में देवता के 188 भेद लिए गए है? 10 भेद कौन से छूटे ?

.....

8. आठवें ग्रैवेयक का नाम क्या है?

.....

9. सम्मुर्च्छिम मनुष्यों की उत्पत्ति कहाँ होती है ?

.....

10. जीव के 563 भेदों में से चक्षुदर्शन में कौन-से भेद नहीं पाए जाते है ?

.....

प्रश्न 5. नीचे दिए गए बोलों में जीवों की संख्या बताए ! फिर उन्हे जोड़ (+) घटाव (-) गुणा (×) करके जो संख्या आए उनके बोल लिखे ! आपकी सुविधा के लिए एक उदाहरण ऊपर दिया गया है? 5

(वचन योगी-तिर्यंचनी+ वायुकाय= मनयोगी-उत्तर : 220-10+2= 212)

1. क्षयोपशमसमकित + उपशमसमकित + सूक्ष्म = ...

2. समचौरस संस्थान - एकान्त पुरुषवेद = ...

3. नरकगति × इन्द्रिय अलद्धिया = ...

4. श्रुतज्ञानी + संयतासंयत + एकान्त शुक्ललेश्या = ...

5. एकेन्द्रिय × वनस्पति + जंबूद्विप = ...

कर्म स्तोक मंजूषा भाग-1

प्रश्न 1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ? **10**

1. मोहनीय कर्म आत्मा की ..... शक्ति को नष्ट कर देता है ।

2. आत्मा के साथ कर्मो का लगा रहना ..... है।

3. ..... प्रदेशों की श्रेणी के अनुसार ही जीव की गति होती है।

4. निमित्त प्राप्त होने पर आयुष्य की काल मर्यादा कम होती है वह ..... आयुष्य है।

5. जिस कर्म के उदय से शरीर में अंग-उपांग व्यवस्थित हो उसे ..... नाम कर्म कहते है।

6. कषाय के निमित्त से ..... व ..... का बंध होता है।

7. प्रमत्त योगों से प्राणों का अतिपात ..... कहलाता है।

8. तिर्यंच श्रावक को भव स्वभाव के कारण ..... गोत्र का उदय होता है?

9. उदय के अभाव में किसी भी प्रकृति की ..... नहीं होती है।

प्रश्न 2. अंको में उत्तर दीजिए ? **10**

1. अचरम शरीरी उपशम सम्यक्त्वी के चौथे गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का सत्ता रहता है ? ( )
2. 14वें गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का उदय रहता है? ( )
3. नवें गुणस्थान के चौथे भाग में कितनी प्रकृतियों का बंध होता है ( )
4. छठे गुणसथान के अंत में कितनी प्रकृतियों का उदय विच्छेद होता है ( )
5. सम्यक्त्व मोहनीय का क्षय या उपशम होने पर जीव को कौन-सा गुणस्थान प्राप्त होता है? ( )
6. असातावेदनीय का उदय कौनसे गुणस्थान तक रह सकता है ( )
7. सातवें गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों की उदीरणा होती है ( )
8. उदय योग्य कुल कितनी प्रकृतियाँ है। ( )
9. पिंड प्रकृतियों के उत्तर भेदों की संख्या कितनी है ? ( )
10. मनुष्य अगर मनुष्यायु का बंध करे तो कौन से गुणस्थान तक रहता है ? ( )

प्रश्न 3. जोड़ी मिलाओ? **10**

1. एकेन्द्रिय	–	काय योग	.....
2. भाषा वर्गणा	–	प्रतिपाती	.....
3. जिननाम	–	योग	.....
4.अनंतानुबंधी	–	उद्योत	.....
5. ज्ञानावरणीय	–	आतप	.....
6. उपशम श्रेणी	–	विसंयोजना	.....
7. तिर्यंच जीव	–	प्रत्येक	.....
8. नपुंसक	–	जीव विपाकी	.....
9. पर्याप्त	–	सयोगि केवलि गुणस्थान	.....
10. कषाय	–	मिथ्यात्व मोहनीय	.....

प्रश्न 4. सही या गलत :- **10**

1. आयुष्य का बंध अर्न्तमूर्हत काल पर्यन्त घोलमान परिणामों में होता है। ( )
2. 5 बंधन नामकर्म का बंध, उदय और उदीरणा भी होती है ? ( )
3. सम्यक्त्व मिथ्यात्व मोहनीय का बंध होने पर आत्मा में उसकी सत्ता हो जाती है ( )
4. सम्यक्त्व मोहनीय का उपशम होने पर ही जीव उपशम श्रेणी आरोहण कर सकता है ( )
5. मनुष्यायु की उदीरणा छठे गुणस्थान तक ही होती है ( )
6. काययोग के द्वारा ही शुभ अशुभ गति होती है। ( )

7. सम्यक्त्व को न्यूनाधिक रूप से आवृत करने वाला कर्म दर्शन मोहनीय है। ( )

8. अनन्तानुबंधी कषाय के उदय के अभव में इसका बंध नहीं होता है। ( )

9. देशविरत गुणस्थान से आगे मनुष्य त्रिक का बंध नहीं होता है। ( )

10. सास्वादन गुणस्थान में तीर्थंकर नाम कर्म की सत्ता नहीं होती है। ( )

प्रश्न 5. निम्न लिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए :- **10**

1. जिननाम का बंध विच्छेद आठवें गुणस्थान के छठे भाग में क्यो हो जाता है -

.....

2. चरम शरीरी उपशम सम्यक्त्वी जीव के कौन-सी आयु की सत्ता रहती है-

.....

3. चारित्र मोहनीय कर्म किसे कहते है ?

.....

4. साता वेदनीय असाता वेदनीय और मनुष्याय की उदीरणा छठे गुणस्थान तक ही क्यों होती है ?

.....

5. बंध किसे कहते है ?

.....

6. आनुपूर्वी नाम कर्म किसे कहते है?

.....

7. चारित्र मोहनीय की कौनसी प्रकृतियों सबसे अधिक घातक है ?

.....

8. 14वें गुणस्थान में उदय वाली प्रकृतियों को लिखें ?

.....

9. दूसरे गुणस्थान में नरकानुपूर्वी का उदय क्यों नहीं है ?

.....

10. ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तराय कर्म का बंध किसके सदभाव में होता है?

.....

प्रश्न 6. नीचे दिए चार्ट में सत्ता योग्य 15 प्रकृतियाँ है उन्हे खोजकर बताए कि उस प्रकृति की सत्ता

उदा. साधारण- 9वें गुणस्थान के पहले भाग के अंतिम समय में

सा	धा	र	ण	श	ट	र	प	क	जु	न	ग	य
घ	ता	ष	ह	स्य	नि	स	व	अ	जु	रु	ल	घु
श	प	ऋ	ट	आ	दे	ह	अ	छ	प्सा	ध	का	म
त	न	फ	र	त	हा	र	क	ए	वि	ति	प्र	च
क	म	च	ल	प	ति	घ	न	क्ष	ग	ल	ख	क्षु
ग	ज	ऋ	ष	भ	ना	रा	च	क	षै	ला	ड	द
व	ह	र	श	त्र	झ	क	र	ष	ठ	भा	र	र्श
न	पुं	स	क	वे	द	न	म	बा	ख	न्त	मो	ना
न्ध	न	क्ष	ज	थ	फ	भ	श	ब	द	रा	ल	र
ब	प	घ	ट	म	पु	च	न	अ	क	य	ल	र
क	ख	द	त	प	उ	प	हा	र	र्क	न	स	णी
रि	धा	न	ह	ब	वे	रा	थ	ब	रा	द	क्षु	य
दा	ख	द्वी	द्रि	य	ट	धा	क	ण	स	छ	च	ध
औ	दा	त	र	बा	ठ	त	प	ध	न	यु	ट	म

नौवें गुणस्थान से 14वें गुण. तक की प्रकृतियाँ है।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

यह प्रश्न-पत्र एवं उत्तर पुस्तिका संयुक्त है।

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु राम

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा-2017

समय : 3 घण्टे
12:30 से 3:30 बजे तक

प्रश्न-उत्तर पत्र भाग - 11 आगम

पूर्णांक : 100

नाम.....पिता/पति का नाम.....

शहर का नाम.....जन्मतिथि.....मोबाइल.....रोल नं.....

नोटः-सभी प्रश्नों के उत्तर, दिये गये निर्देशों के अनुसार, निर्धारित स्थान पर, इसी प्रश्न पत्र में लिखें। उत्तर पुस्तिका जाँचने पर यदि यह पुष्टि होती है कि परीक्षार्थी ने दूसरे का सहयोग लिया है अथवा एकाधिक पुस्तिकाओं के उत्तर समान है तो उसे नकल किया हुआ मानकर परिणाम निरस्त कर दिया जावेगा। केन्द्र अधीक्षक उपरोक्त प्रश्नोत्तर पुस्तिका परीक्षा समाप्ति के अगले दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) के पते पर भिजवावें।

प्रश्न 1. भावार्थ लिखिए : **32**

1. णिच्छिण्णसव्वदकुक्खा, जाइजरामरणबंधणविमुक्का। अव्वाबाहं सुक्खं, अणुहोंति सासय सिद्धा।।

.....

.....

2. स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धीन्द्रियावधिविषयोऽधिकाः। गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतों हीनाः।।

.....

.....

3. जे आयरिय-उवज्झायणं सुस्सूसा वयणंकरा। तेसि सिक्खा पदडंख्यति जलसित्ता इव पायवा।।

.....

.....

4. धम्मं पि हु सद्धहन्तया, दुल्लहया काएण फासया। इह कामगुणेहि मुच्छिया, समयं गोयम। मा पमायए।।

.....

.....

5. जहाकरेणपरिकण्णे कुंजरे सट्ठिहायणे। बलवन्ते अप्पडिहए एवं हवइ बहुस्सुए ।।

.....

6. एवं धम्मस्स विणओ मंलं, परमो से मोक्खो। जेण कित्तिं सुयं सिग्धं निस्सेसं चाभिगच्छइ।।

7. तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्धाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाः सात्वानां परा स्थितिः।

8. सदसतोरविशेषाद् यदृच्छोपलब्धेरून्मत्तवत्।

9. ण वि अत्थि माणुसाणं, तं सोक्खं ण वि य सव्वदेवाणं। जं सिद्धाणं सोक्खं, अव्वाबाहं उवगयाणं।।

10. नीयं सेज्ज गइं ठाणं, नीयं च आसणाणि य। नीयं च पाए वंदेज्जा, नीयं कुज्जा य अंजलिं।

11. राइणिएसु विणयं पउंजे, डहरा वि य जे परियायजेट्ठा।
नियत्तणे वट्टइ सच्चवाई, ओवायवं वक्ककरे, स पुज्जो।।

12. अह पंचहि ठाणेहिं जेहि सिक्खा न लब्भइ। धम्मा कोहा पमाएणं रोगेणाऽऽलस्सएण य।।

13. बुद्धे परिनिव्वुडे चरे, गामगए नगरे व संजए। सन्तिमग्गं च बहुए समयं गोयम ! मा पमायए।।

14. स्निग्धरूक्षत्वाद्बन्धः। न जघन्यगुणानाम्। गुणसाम्ये सद्दशानाम्। द्वयधिकादिगुणानां तु।।

.....

.....

15. जत्थ य एगो सिद्धो, तत्थ अणंता भवक्खयविमुक्का। अण्णोण्णसमोगाढा, पुठ्ठा सव्वे य लोगंते।।

.....

.....

16. तेवतं गुरुं पूयंति तस्स सिप्पस्स कारणा। सक्कारंति नमंसंत्ति तुट्ठा निद्दसवत्तिणो ।।

.....

.....

प्रश्न 2. नीचे दिए गए भावार्थ का मूल पाठ लिखिए- **20**

1. मनुष्य (धनादि के लाभ की) आशा से लोहे के कांटो को उत्साहपूर्वक सहनकर सकता है किन्तु जो (किसी भौतिक लाभ की) आशा के बिना कानों में प्रविष्ट होने वाले तीक्ष्ण वचनमय कांटो को सहन कर लेता है वही पूज्य होता है।

.....

.....

2. पांच कारणों से शिक्षा प्राप्त नहीं होती (वे इस प्रकरण है) -1) अभिमान 2) क्रोध 3)प्रमाद 4) रोग 5)आलस्य ।

.....

.....

3. सागर के समान गंभीर दुएसद (परिषहादि से) अविचलित परावरवदियों द्वारा अत्रासित अर्थात अजेय, विपुल श्रुतज्ञान से परिपूर्ण और त्राता (षटकायरक्षक) ऐसे बहुश्रुत मुनि कर्मो का सर्वथाक्षय करके उत्तम गति में पहुंचते है।

.....

.....

4. एक सिद्ध के सुखों को तीनों कालों से गुणित करने पर जो सुख-राशि निष्पन्न हो, उसे यदि अन्त वर्ग से विभाजित किया जाए, जो सुख-राशि भागफल के रूप में प्राप्त हो, वह भी इतनी अधिक होती है कि सम्पूर्ण आकाश में समाहित नहीं हो सकती ।

.....

.....

5. उपपात जन्म से होने वाले देव, नैरयिक और चरमशारीरी, उत्तम पुरूष ओर अंसख्यात वर्ष की आयु वाले युगलिक, ये सब अनपवर्तनीय आयुष्य वाले ही होते हैं।

.....

.....

6. चार गति, चार कषाय, तीन वेद, मिथ्यादर्शन, अज्ञान, असंयम, असिद्धत्व छहलेश्या -इस प्रकार कुल मिलाकर इक्कीस भेद औद्यिक भाव के हैं।

.....

.....

7. जैसे नक्षत्रों के परिवार से परिनिवृत नक्षत्रों का अधिपति पूर्णमासी को परिपूर्ण होता है, उसी प्रकार बहुश्रुत (जिज्ञासु साधकों से परिवृत, साधुओं का अधिपति एवं ज्ञानादि सकल कलाओं से परिपूर्ण) होता है।

.....

.....

8. मानुषोत्तर पर्वत के पहिले ही अढ़ाई द्वीप में मनुष्य उत्पन्न होते है। ये मनुष्य आर्य और म्लेच्छ के भेद से दो प्रकार के है।

.....

.....

9. शरीर, वचन, मन, उच्छवास, निःश्वास- यह पुद्गलों का उपकार है। तथा सुख, दुःख, जीवन और मरण भी पुद्गलों के ही उपकार है।

.....

.....

10.'' जो बार-बार क्रोध करता है, 2) जो क्रोध को निरन्तर लंबे समय तक बनाऐं रखता हैं, 3) जो मेत्री किए जाने पर भी उसे ठुकरा देता है, 4) जो श्रुत प्राप्त करके अंहकार करता है 5) जो स्खलना रूप पाप को लकर (अचार्य आदि की) निन्दा करता है। 6) जो मित्रों पर भी क्रोध करता है। 7) जो अत्यन्त प्रिय मित्र का भी एकान्त में अवर्णवाद बोलता है 8) जो प्रकीर्णवादी 9) द्रोही है 10) अभिमानी है 11) रसलोलुपी है

12) जो अजितेन्द्रिय है 13) असंविभागी है 14) और अप्रीति-उत्पादक है।

.....

.....

प्रश्न 3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए- **10**

1. वसे .....निच्चं जोगवं उवहाणवं
2. वर्तना परिणामः क्रिया.....च कालस्य।
3. अबले जह.....मा मग्गे विसमेवदगाहिया।
4. इय सिद्धाणं सोक्खं ..... णत्थि तस्स ओवम्मं
5. जहा से कम्बोयाणं आइण्णे .....सिया।
6. तदादीनि.....युगपदेकस्याऽऽचतुर्म्यः।
7. साहप्पसाहा विरुहंति....., तओ से पुप्फं च फलं रसो या।
8. .....हु हवंति कंटया, अओमया ते वि तओ सुउद्धरा।
9. चिच्चाणं धणं च.....पव्वइयों हि सि अणगारियं।
10. शुभ विशुद्धमव्याघाति.....चतुर्दशपूर्व धरस्यैव ।

प्रश्न 4. सही/गलत बताइये- **15**

1. असचित्तशीतसंवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः। ( )
2. अलोगे पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पडिट्ठिया। ( )
3. तद्भिभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषनीलरुक्मि शिखरिणो वलयाकृत पर्वताः। ( )
4. तरित्तु ते ओहमिर्ण दुरूतरं, खवित्तु कम्मं गइमुर्तमं गया। ( )
5. तेसिं गुरुणं गुणसागराणं, सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं। ( )
6. बुद्धस्स निसम्म अभासियं सुकहियमठ्टपओवसोहियं। ( )
7. जहा से नगाण पवरे समुहं मन्दरे सागरगंमा। ( )
8. तारकाणं। चतुर्भाग, जघन्या त्वष्टभागः। ( )
9. उम्मुक्ककम्मकवया, अजरा अमरा असंगा य। ( )
10. अविणयं णि जो उवाएण चोइओ कुप्पई नरो। ( )
11. एवं भव-संसारे संसरइ, सुहासुहेहि कम्मेहिं। ( )
12. जीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्गलाः। ( )
13. अलोलुए अक्कुहए अमायी, अपिसुणे यावि दीनवित्ती। ( )
14. जहां से तिक्खदाढे उदग्गे दुप्पहंसए। ( )

15. एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्ना चतुमर्यः। ( )

प्रश्न 5 अगर गाथा कि शुरूआत ऐसी होगी तो उसके बाद वाली गाथा की शुरूआत (पहला चरण) कैसी होगी ? 12

जैसे- कहिं पडिहया सिद्धा.....अलोगे पडिहया सिद्धा.....।

1. फुसइ अणंते सिद्धे .....
2. तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृतो .....
3. तहेव अविणीयप्पा .....
4. समावयंता वयणाभिधाया .....
5. वाउ-कायमइगओ .....
6. जहा से तिक्खदाढे .....
7. जह णाम कोइ मिच्छो .....
8. सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि .....
9. अप्पणट्ठा परट्ठा वा .....
10. जे मणिया समयं माणयंति .....
11. देवे नेरइए य अइगओ .....
12. संजोगा विप्पमुक्कस्स .....

प्रश्न 6.बहुश्रुतता की उपलब्धि वाला आठ कारणों से शिक्षाशील कहलाता है? वे आठ कारण लिखिए?2

.....

.....

प्रश्न 7. श्रमण भगवान प्रभु महावीर ने मनुष्य जन्म प्राप्ति के बाद भी धर्माचरण की दुलर्भल के पाँच कारण बताए और प्रमादत्याग की प्रेरणा दी ? वे पाँच कारण क्या है ? लिखे । 1

.....

प्रश्न 8 सिद्धभगवान की जघन्य और उत्कृष्ट अवगाहना कितनी है ? 1

.....

प्रश्न 9 वे कौन-से शरीर है जो प्रतिघात और बाधा रहित है ? 1

.....

प्रश्न 10 त्रीन्द्रिय में उत्पन्न हुआ जीव उत्कृष्ट उसी काय में कब तक रह सकता है ? 1

.....

प्रश्न 11. जोड़ी मिलाओ- 5

1. तिभागहीणं	-	(अ.) जीवस्य	.....
2. अविग्ह	-	(ब.) पओएणं	.....
3. दुग्गओ वा	-	(स.) संरवाईयं	.....
4. अलोलुए	-	(द.) सिद्धाणोगाहणा	.....
5. कालं	-	(य.) अक्कुहए	.....